अध्याय-6

शब्द शक्तियाँ

शब्द की शक्ति असीम है। शब्द हमारे मन, कल्पना तथा अनुभूति पर प्रभाव डालता है। प्रयोग के अनुसार शब्द का अर्थ बदल जाता है। अभीष्ट अर्थ श्रोता तक पहुँचाने की क्षमता अथवा शब्द में छिपे हुए तात्पर्य को प्रसंगानुसार स्पष्ट करने की सामर्थ्य ही शब्द शक्ति है।

उदाहरण के लिए–रमेश की 'गाय' पाँच किलो दूध देती है। तथा–सुमित्रा की बहू तो निरी 'गाय' है। इन दोनों वाक्यों में 'गाय' शब्द आया है मगर अर्थ दोनों में भिन्न (एक में पशु का नाम तो दूसरे में भोला, सीधा व सरल व्यक्ति) है। इस प्रकार वक्ता या लेखक के अभीष्ट का बोध कराने का गुण ही शब्द शक्ति है। शब्द और अर्थ के इस चमत्कारिक स्वरूप को प्रकट करने वाली शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की हैं–

शब्द शक्तियाँ

शब्द शक्ति का नाम–	अभिधा	लक्षणा	व्यञ्जना
शब्द–	वाचक	लक्षक	व्यञ्जक
अर्थ–	वाच्यार्थ (अभिधेयार्थ)	लक्ष्यार्थ	व्यंग्यार्थ

1. अभिधा शब्द शक्ति–शब्द की जिस शक्ति से किसी शब्द के सबसे साधारण, लोक प्रचलित अथवा मुख्य अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

पण्डित रामदहिन मिश्र ने 'साक्षात् सांकेतिक अर्थ को अभिधा' कहा है तो आचार्य मम्मट मुख्यार्थ का बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा व्यापार करते हैं।

इस प्रकार कह सकते हैं कि शब्द को सुनते ही अथवा पढ़ते ही श्रोता या पाठक उसके सबसे सरल, प्रचलित अर्थ को बिना अवरोध के ग्रहण करता है, वह अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।

अभिधेयार्थ शब्द 'वाचक' कहलाता है तथा प्राप्त अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है। अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण–

- राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे।
- गुलाब का फूल बहुत सुन्दर है।
- मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
- गाय घास चर रही है।

उपर्युक्त सभी वाक्यों के अर्थ ग्रहण में किसी प्रकार का अवरोध नहीं है।

2. लक्षणा शब्द शक्ति–जब किसी शब्द के मुख्यार्थ में बाधा हो या अभीष्ट अर्थ का बोध न हो तब अन्य अर्थ किसी लक्षण पर अथवा दीर्घ काल से माने जा रहे रूढ़ अर्थ पर आधारित होता है। लक्षणा शब्द शक्ति के दो भेद इस प्रकार हैं–

(i) पुलिस देख चोर 'चौकन्ना' हो गया।

इसमें चोर द्वारा 'चौकन्ना' होने का अर्थ है–सजग हो जाना, सावधान हो जाना या अपने बचाव का उपाय सोच लेना। जबकि चौकन्ना का शाब्दिक अर्थ है–चौ = चार, कन्ना = कान अर्थात् 'चार कान वाला' अत: दो की जगह चार कान कहने का तात्पर्य है कानों का अधिकाधिक उपयोग करना, उनका पूरा लाभ उठाना। अत: यह अर्थ लक्षण पर आधारित हुआ। अत: यह **प्रयोजनवती लक्षणा** कहलाता है।

इसी प्रकार उदाहरण–

(ii) राजेश का पुत्र तो 'ऊँट' हो गया है।

इसमें 'ऊँट' का अर्थ है–अधिक लम्बा होना। अब यह अर्थ 'रूढ़ि' के आधार पर लिया गया है। अत: यह **रूढ़ा लक्षणा** कहलाता है। इस प्रकार लक्षणा शब्द शक्ति में लक्षण या प्रयोजन तथा रूढ़ि द्वारा अर्थ ग्रहण किया जाता है।

अन्य उदाहरण–

- लाला लाजपत राय पंजाब के शेर हैं।
- सारा घर मेला देखने गया है।
- नरेश तो गधा है।
- वह हवा से बातें कर रहा था।
- सैनिकों ने कमर कस ली है।

उक्त उदाहरणों में 'शेर', 'घर', 'गधा', 'हवा', 'कमर कसना' आदि लाक्षणिक शब्द हैं जिनके, लाक्षणिक अर्थ ही ग्रहण किये जायेंगे।

3. व्यञ्जना शब्द शक्ति–जब किसी शब्द का अर्थ न अभिधा से प्रकट होता है न लक्षणा से बल्कि कोई अन्य अर्थ ही प्रकट होता है। वहाँ व्यञ्जना शब्द शक्ति होती है।

'व्यञ्जना' का अर्थ है विकसित करना, स्पष्ट करना, रहस्य खोलना। अत: किसी शब्द का छुपा हुआ अन्य अर्थ ज्ञात करना ही व्यञ्जना शब्द शक्ति कहलाती है। इसमें कथन के सन्दर्भ के अनुसार एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ प्रकट होते हैं तो कभी श्रोता या पाठक की कल्पना शक्ति कोई नया अर्थ गढ़ लेती है। इस प्रकार व्यञ्जना शब्द शक्ति विविध आयामी अर्थ अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। जैसे–'सन्ध्या हो गई।' वाक्य का अर्थ चरवाहे के लिए घर लौटने का समय है तो पुजारी के लिए पूजन वंदन का समय है।

व्यञ्जना शब्द शक्ति से प्राप्त अर्थ को दो भागों में विभक्त करते हैं–

(i) शाब्दी व्यंजना–जब व्यंजना शब्द पर निर्भर हो, शब्द बदल देने से अर्थात् पर्याय रख देने से अर्थ बदल जाता हो वहाँ व्यंजना होती है क्योंकि अभीष्ट अर्थ के लिए वही शब्द आवश्यक है। जैसे–

चिरजीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि, ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।।

यहाँ वृषभानुजा का अर्थ राधा तथा गाय है वहीं हलधर के भी दो अर्थ बलराम तथा बैल हैं। अत: यहाँ शब्द का चमत्कार जो पर्याय रख देने पर नहीं रह सकता। शाब्दी व्यञ्जना का अन्य उदाहरण है–

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।

इसमें 'पानी' शब्द के तीन अर्थ (चमक, सम्मान एवं जल) उसके पर्याय रख देने पर नहीं रहेंगे।

(ii) आर्थी व्यञ्जना—जब शब्दार्थ की व्यञ्जना अर्थ पर निर्भर रहती है। उसका पर्याय रख देने पर भी अभीष्ट की पूर्ति हो जाती है वहाँ आर्थी व्यञ्जना होती है। आर्थी व्यञ्जना में बोलने वाले, सुनने वाले, प्रकरण, देशकाल, कण्ठस्वर आदि का बोध कराती है। जैसे–

सघन कुंज, छाया सुखद, सीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै, वा यमुना के तीर।।

इसमें गोपिका कृष्ण के साथ बिताये यमुना तट की लीलाओं को याद कर रही हैं। जो बातें वह कहना चाहती है, हृदय के जिन भावों का प्रवाह वह व्यक्त करना चाहती है वह समस्त भाव संसार यहाँ व्यक्त हो गया है।

शब्द-शक्तियों की तुलनात्मक तालिका

	अभिधा	लक्षणा	व्यञ्जना
(i)	मुख्यार्थ	लक्ष्यार्थ	व्यंग्यार्थ
(ii)	सर्वविदित सरलार्थ	रूढ़ या प्रयोजनार्थ/प्रयोजनार्थ	सन्दर्भ के अनुसार अभिप्रेत अर्थ
(iii)	तुम्हारा पुत्र मूर्ख है।	तुम्हारा पुत्र गधा है।	तुम्हारा पुत्र तो वृहस्पति का अवतार है।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. अभिधा शब्द शक्ति से प्राप्त अर्थ कहलाता है–
(अ) व्यंग्यार्थ (ब) वाच्यार्थ
(स) लक्षयार्थ (द) भावार्थ [ ]

प्र. 2. लक्षण पर आधारित अर्थ प्राप्त होता है–
(अ) अभिधा से (ब) व्यञ्जना से
(स) लक्षणा से (द) लक्षणा एवं व्यञ्जना से [ ]

प्र. 3. परम्परागत रूढ़ अर्थ व्यञ्जित होता है–
(अ) व्यंग्य से (ब) लक्षण से
(स) सरलार्थ से (द) संकेत से [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (स) 3. (ब)

प्र. 4. अभिधा एवं लक्षणा शब्द शक्ति में अन्तर बतलाइये।

प्र. 5. व्यञ्जना शब्द शक्ति का अर्थ एवं उदाहरण बतलाइये।

प्र. 6. शाब्दी व्यञ्जना एवं आर्थी व्यञ्जना में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्र. 7. अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना शब्द शक्तियों की परिभाषा विशेषताएँ विस्तार से लिखते हुए तीन-तीन उदाहरण लिखिए।